Raga of the Month May 2021 Raganga Shree

रागांग श्री

पूर्वी थाटके सायंकालीन सन्धिप्रकाश रागोंमे राग श्री एक महत्वका स्थान रखता है। राग श्री के साथ कुछ पौराणिक कथाएं भी जुडी हैं। मध्य कालमे राग रागिणी वर्गीकरण पद्धतिमें राग श्री छह पुरुष रागोंमे एक माना गया था। श्री रागका वर्णन पुराने ग्रंथोंमे किया हुआ मिलता है, लेकिन राग श्रीके स्वरूपमे कालानुसार परिवर्तन हुआ है।

पूर्वी थाटमे पूर्वी रागांग तथा श्री रागांग शामिल है। श्री रागांगके रागोंमे श्री , बसंत, त्रिवेणी, मालवी, टंकेश्री, श्री अंगका रेवा और जैतश्री ये राग आते हैं। गौरी रागांग श्री का उपांग माना गया है। अब वर्तमान राग श्री का चलन और विशेष स्वर समूह देखते हैं।

सा, ग॒रे॒ सा, प, मं प ध॒ प, ध॒ मं ग रे॒, मं ग रे॒, सा, सा रे॒ सा;

मं प, नि सां , रें॒ सां , रें॒ नि ध॒ प, मं प नि ध॒ प, ध॒ मं ग रे॒, ग रे॒, ग॒रे॒ सा

श्री रागके विशेष स्वर समूह जो रागांग वाचक माने जाते हैं - कोमल रिषभ को गंधारका स्पर्श तथा कोमल रिषभ और पंचम का संवाद।

श्री और मारवा रागोंके रिषभ के स्वर उच्चारण की विशेषताएं पंडित के जी गिंडेजीने लेक्चर डेमो में स्पष्ट की है।

प्रचारमें पंडित द वि पलुस्कर , उस्ताद अमीर खां आदि गायकोंसे जो श्री राग हम सुनते हैं , उसमे कोमल रिषभ की अपेक्षा कोमल धैवतका महत्त्व कम रहता है। लेकिन उस्ताद विलायत खांने कोमल धैवत का महत्त्व बढाकर श्री रागको एक नया आयाम दिया है।

जयपुर अत्रौली घरानेके गायकोंने श्री अंग और राग भैरवका संयोग करके फूलश्री राग प्रस्तुत किया है। श्रीमती मंजिरी असनारे केळकरने* गाया हुआ उस रागका नमूना सुनेंगे।

आजके ऑडिओमें हम पं. के जी गिंडे द्वारा लेक्चर डेमो में प्रस्तुत रागांग श्री की विशेषताएँ और उनके गुरू आचार्य श्रीकृष्ण रातंजनकरजीने रची हुई बंदिश, "गुनी गुन निहारे " सुनेंगे , तत्पश्चात उस्ताद विलायत खां द्वारा प्रस्तुत श्री रागका अंश और अंतमें श्रीमती मंजिरी असनारे केळकरने गाया हुआ राग फूलश्रीका नमूना सुनेंगे ।

* मंजिरी का जन्म संगीत सम्पन्न परिवार में हुआ। उनके पिताजी प्रसिद्ध तबला वादक थे। मंजिरीने संगीतकी प्रारंभिक शिक्षा गुरू चिंतुबुआ म्हैसकर से प्राप्त की। उसके बादमें उन्हें जयपूर अत्रौली घरानेके, उस्ताद भुर्जी खां के शिष्य, पंडित मधुसूदन कानेटकरजीसे कई वर्ष संगीत की शिक्षा लेनेका सौभाग्य मिला। अब वे रेडिओकी A ग्रेड प्राप्त गायिका है और उन्होंने सवाई गन्धर्व , डोवरलेन, हर वल्लभ, ITC संगीत आदि देशके विविध प्रतिष्ठित समारोहोंमे कला प्रस्तुति की है और रसिकोंसे मान्यता प्राप्त की है। २०२० सालमे कोरोना महामारी के कठिन बँधनोंका सकारात्मक फायदा उठाते हुए श्रीमती मंजिरीजीने कुटुंबके सदस्योंकी सहायतासे "आमोदिनी " यू ट्यूब विडियो मालिकाके माध्यमसे ४० अप्रचलित रागोंकी जानकारी विद्यार्थिओं तथा जिज्ञासू रसिकोंतक पहुँचायी है।

{ आभार प्रदर्शन - क्रमिक पुस्तक मालिका और संगीत शास्त्र; पं . यशवंत महाले, श्री. अजय गिंडे ,
Deepak Raja's article on Raga Shree- swaratala.blogspot ;
श्रीमती मंजिरी असनारे केळकर- ऑडिओ "आमोदिनी " मालिका - यू ट्यूबसे प्राप्त **}**

०१-०५ -२०२१